दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 7 6 4 6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 135½

टिप्पणी (Remarks): सामान्यतः उत्तर अच्छे हैं। कुछ उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

राहुल सांकृत्यायन ने माना था कि जब से हिन्दी अपभ्रंश का केंचुल छोड़कर आगे बढ़ी तभी से इसे हिंदी की शुरुआत मानी जानी चाहिए। हिंदी का यही प्रारम्भिक स्वरूप हमें नाथ-सिद्ध और जैन साहित्य में दिखाई पड़ता है। इनमें भी नाथ साहित्य सबसे प्रखर रूप में आगे दिखाई पड़ता है।

नाथ-साहित्य से ही हिंदी की ध्वनियों और शब्दावली का प्रारम्भिक स्वरूप स्पष्ट होना शुरू होता है।

"जौ लग पाती आगे नाचे पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन ले जोगी खेले तब अन्तर बसै भण्डारा"

"नाथै बोले अमृतवाणी,
बरिसैगी कम्बली भीगेगा पाणी"

नाथ-साहित्य में हिन्दी के सर्वनाम, संज्ञा तथा क्रियापदों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी अपने आत्मीक स्वरूप में स्पष्ट दिखाई पड़ने लगती है।
नाथ- साहित्य में संयुक्त के रूप में 'नौ' का प्रयोग वर्तमान हिन्दी के अनुरूप होते है।
नाथ- साहित्य का प्रभाव ही आगे की परम्परा में अमीर-खुसरो जैसे तथा कबीर जैसे कवियों पर पड़ता है जो हिन्दी के प्रारम्भिक स्वरूप को उभारने में योगदान देते थे।

ठीक है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्य भाषा की तृतीय अवस्था है। पाली और प्राकृत के बाद सरलीकरण की प्रक्रिया में अपभ्रंश का विकास हुआ। इसे पूर्व अपभ्रंश भी कहा जाता है हिन्दी के प्रारम्भिक स्वरूप का विकास, इसकी कारक-व्यवस्था में देखा जा सकता है।

अपभ्रंश में भी हिन्दी के लगभग सभी कारक पाये जाते हैं। इसका सबसे उत्तम स्वरूप जैन कवियों की रचनाओं में दिखाई पड़ता है।

अपभ्रंश के कारक —

1. कर्ता -
2. कर्म - को
3. करण - सो, से, सैं
4. सम्प्रदान - क्हाके, लीए, हेउ,
5. अपादान - तिसि, परैं,
6. सम्बन्ध - तैव, वीहि, से, सि,
7. अधिकरण - आई, जाई
8. सम्बोधन - हो,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार अपभ्रंश में कर्ता कारक के लिए कोई परसर्ग विकसित नहीं हुआ था। यद्यपि हिन्दी के अन्य कारकों का यहाँ पर प्रयोग दिखाई पड़ता है। इनमें स्थानीय हिलपता के तत्व भी दिखाई पड़ते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

हिन्दी भाषा के विकास में अनेक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं ने प्रयास किया है। इनमें केन्द्रीय निदेशालय का योगदान अविस्मरणीय है। यह एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था है जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन कार्य करती है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना 1960 के दशक में हुई थी तभी से यह निम्न प्रकार से हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के विकास को प्रोत्साहित कर रही है।

① हिन्दी भाषा में लेखन के लिए प्रतिवर्ष पुरस्कारों की घोषणा।
② हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न क्षेत्रों में योगदान।
③ हिन्दी भाषा के साहित्य व प्रयोग के लिए मानकीकरण।
④ हिन्दी भाषा के लिए शब्दकोश निर्माण।
⑤ हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्थिक प्रोत्साहन, राष्ट्रीय स्तर पर सभा, सम्मेलन का आयोजन

⑥ हिन्दी भाषा के पढ़ाई व शोध के लिए मौद्रिक सहायता।

⑦ हिन्दी भाषा के विकास में लगी संस्थाओं को मौद्रिक सहायता।

इस प्रकार हिन्दी भाषा के विकास के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का योगदान सराहनीय एवं अप्रतिम है।

6/10 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

हिन्दी भाषा का व्याकरण "चन्द छन्द बरन की महिमा" से शुरू मानकर भी इसकी वास्तविक शुरुआत 19वीं सदी मानी जाती है। 19वीं सदी में केलॉग का हिन्दी व्याकरण प्रारम्भिक हिन्दी सैद्धान्तिक प्रयोगों में से एक था।

केलॉग के हिन्दी व्याकरण की निम्न विशेषताएं हैं—

① केलॉग के व्याकरण का आधार अंग्रेजी व्याकरण को ही बनाया।

② इनके व्याकरण की सर्वप्रमुख विशेषता थी कि इन्होंने हिन्दी को अंग्रेजी की तरह, व्यवस्थित व वैज्ञानिक आधार दिया।

③ संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया के स्वरूप की स्थापना की।

④ कारक व्यवस्था पर इनका कार्य प्रशंसनीय था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन कुछ आरोप भी लगाया जाता है कि हिन्दी उत्पत्ति और विकास का विवरण नहीं है तिके। इनके अलावा हिन्दी के व्याकरण को अंग्रेजी आधार पर लिखकर अनेक ~~भ्र~~ भ्रान्तियों का कारण बना दिया। केलॉग प्रयास आरंभिक के साथ साहसिक था जिसने 20वीं सदी में कामता प्रसाद गुरु ने आगे बढ़ाया

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाने को लेकर हुए उत्तर-दक्षिण विवाद की पृष्ठभूमि में 1963 में राजभाषा अधिनियम लाया गया। इसमें निम्न व्यवस्था की गई—

(I) अंग्रेजी भाषा का प्रयोग, हिन्दी भाषा के साथ तब तक होता रहेगा जब तक गैर हिन्दी भाषी राज्यों के साथ सहमति न बन जाए।

(II) हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु सरकारी प्रयास किये जायेंगे।

(III) हिन्दी भाषा को उद्देश्य की अपेक्षाओं के अनुरूप विकसित किया जाए।

(IV) हिन्दी का प्रयोग सरकारी कामकाज में किया जाए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार राजभाषा अधिनियम 1963 से तय हो गया कि हिन्दी भाषा भारत की एकमात्र राजभाषा नहीं और अंग्रेजी के साथ इसे यह स्थान बांटना है। यह प्रवृत्ति आज भी हिन्दी को राज्यभाषा बनने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी व्याकरण लेखन का प्रथम व्यवस्थित प्रयास 19वी सदी में किया गया। जिनमें गिलक्राइस्ट, केलॉग, राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद थे। कामता प्रसाद गुरु को 20वी सदी में नागरी-प्रचारिणी सभा ने यह कार्य 1917 में सौंपा था। आपने इस ऐतिहासिक दायित्व को इन्होंने बहुत खूबसूरती से निभाया।

कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण की निम्न विशेषताएं थी।—

(I) सर्वप्रथम इन्होंने हिन्दी की उत्पाती की भी एक प्रक्रिया बताई। लेकिन इन्होंने हिन्दी के साहित्य के आधार पर किया।

(II) हिन्दी व्याकरण की आधारिक संरचना के लिए इन्होंने मराठी तथा अंग्रेजी के व्याकरण को आधार बनाया। मूलतः वास्तविक आधार अंग्रेजी व्याकरण ही था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसका कारण वे स्वयं बताते हैं कि इससे मेहनत की बचत तथा लोगों को समझना आसान होगा।

③ इन्होंने हिन्दी की व्याकरण व्यवस्था में शिवप्रसाद सितारे 'हिन्द' की परम्परा को महत्त्व अवश्य दिया परन्तु मौलिक प्रयोग करते हुए हिन्दी की कारक-व्यवस्था तथा वर्ण सोचना प्रदान की।

④ इन्होंने अपने व्याकरण में हिन्दी की काल तथा वचन व्यवस्था को लगभग स्थिरता प्रदान कर दी।

⑤ कामता प्रसाद गुरु के लेखन की समीक्षा का कार्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में हुआ। इस प्रकार इसमें उच्च आचार्य सिंचार दिखाई पड़ता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कुछ आरोप भी लगाते हैं —
इनको अंग्रेजी व्याकरण के
आधार बताने के कारण
हिन्दी व संस्कृत की स्वयं की
विशेषताएं नहीं उभर पाती हैं।
आचार्य किशोरीदास वाजपेयी
इस कमी को दूर कर देते हैं।
इसके अलावा लिंग व्यवस्था
तथा प्रत्यय व्यवस्था और
कर्म वाच्य व कर्तृ वाच्य में भी
समस्या थी जो मूलतः अंग्रेजी
की तर्जना के कारण था।
कामता प्रसाद गुरु ने इच्छा
व्यक्त की थी हिन्दी में "महाभाष्य"
"अष्टाध्यायी" को आधार बनाकर
व्याकरण लिखा जाना चाहिए
जिसे आगे चलकर किशोरी
दास वाजपेयी ने पूरा किया। इस
प्रकार कामता प्रसाद का योगदान
ऐतिहासिक और अप्रतिम है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की संज्ञा व्यवस्था,
यह व्यवस्था के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण विभाजी पद व्यवस्था है।

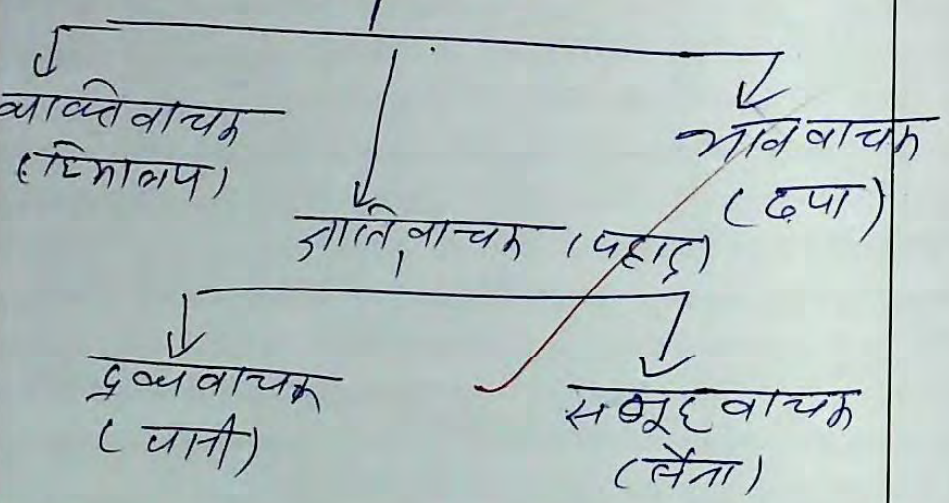

किसी स्थान, भाव, वस्तु विचार को संज्ञा के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके निम्न प्रकार हैं।

संज्ञा-भेद

- व्यक्तिवाचक (हिमालय)
- जातिवाचक (पहाड़)
  - द्रव्यवाचक (पानी)
  - समूहवाचक (सेना)
- भाववाचक (दया)

Ⓐ व्यक्तिवाचक संज्ञा —
व्यक्ति के नाम को किसी स्थान, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहा जाता है। व्यक्तिवाचक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संज्ञा भी कभी-कभी प्रयोग के आधार पर जातिवाचक बन जाती है।

जयचन्द एक राजा थे - व्यक्तिवाचक संज्ञा

'क' भारत का जयचन्द निकला
जातिवाचक

(2) जातिवाचक संज्ञा - जब किसी पद द्वारा किसी वस्तुओं का समूह का बोध हो। जैसे- सेना, पहाड़, पेड़
इसके दो भेद है।

(3) द्रव्य वाचक संज्ञा:- इसमें किसी पदार्थ का बोध होता है। जैसे पानी, ..

(4) समूह वाचक:- जब किसी समूह का बोध हो eg: 'सेना'।

जातिवाचक संज्ञा भी कहीं-कहीं प्रयोग के कारण व्यक्तिवाचक बन जाती है - बापू, नेता जी, नेता जी जातिवाचक है लेकिन अब सुभाष चन्द्र बोस के लिए प्रयोग होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाववाचक :- विचार भाव को व्यक्त करने वाले पदों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं- दया, दुःख आदि।

इस प्रकार हिन्दी की संज्ञा व्यवस्था अत्यन्त वैज्ञानिक व मौलिक है। इसने हिन्दी को आधार प्रदान किया है।

10/9(?)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की विभिन्न बोलियों में 'मैथिली' बोली के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बिहारी हिन्दी को पूर्वी हिन्दी का विस्तार माना जाता है। यद्यपि इस पर विवाद है। बिहारी हिन्दी की प्रमुख बोलियों में मैथिली, भोजपुरी, मगही, तथा अंगिका है। लेकिन 'मैथिली' बोली साहित्यिक दृष्टि से सबसे सम्पन्न भाषा-बोली है।

'मैथिली कोकिल' विद्यापति मैथिली बोली के स्थाई प्रतिनिधित्व कर्ता तथा स्थाई प्रसिद्धि के आधार हैं। विद्यापति पदावली इनकी श्रेष्ठ रचना है। जिसमें नायिका भेद, शृंगार वर्णन, भक्ति सब कुछ अपने चरम सौन्दर्य में है।

मैथिली बोली में विद्यापति के अलावा हेमंत नाथ झा, तथा हरिश्चन्द्र सिंह का स्थान भी अद्वितीय है। वर्तमान मैथिली बोली साहित्य को अपने कृतित्व से ऊपर उठाया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

मैथिली बोली, भारत की एकमात्र भाषा थी जिसे ज्ञानपीठ ने 8वीं अनुसूची में शामिल किये बिना ही ज्ञानपीठ पुरस्कार देता था। मैथिली साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व को दिखाता है।

बिहारी हिन्दी में भोजपुरी तथा मैथिली बोली का अपना साहित्यिक महत्त्व है। मैथिली अपनी महान साहित्यिक परम्परा, और अद्वितीय योगदान से 8वीं अनुसूची में शामिल हो गयी है।

इस प्रकार बिहारी हिन्दी में मैथिली साहित्य का महत्त्व प्रतिवर्ष प्राप्त होने वाले साहित्य अकेदमी पुरस्कारों और ज्ञानपीठ पुरस्कारों के अलावा विद्यापती की कीर्तिलता व कीर्तिपताका विद्यापति पदावली है।

महत्त्व लाएँ
उदाहरण अपेक्षित

6/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की राधा

राधा न केवल हिन्दी साहित्य बल्कि अन्य भाषाओं में सबसे ज्यादा प्रमुख सर्वकीय चरित्र है। यद्यपि हर युग साहित्यकार राधा पर लिखता है। फिर भी हिंदी साहित्य और मैथिली साहित्य में विद्यापति की राधा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व प्रसिद्ध है।

विद्यापति पदावली में राधा का स्वरूप जो दिखाई पड़ता है वह ईश्वरीय व ~~सिधकीय~~ कम सांसारिक व मानवीय अधिक प्रतीत होता है। ~~इनमें~~ संयोग श्रृंगार व वियोग श्रृंगार का ऐसा मिश्रण है कि कुछ आलोचक कहने लगते हैं कि वे विशुद्ध श्रृंगारिक रचना है। इसमें भक्ति का वह भाव और औदात्य नहीं जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सूर के कृष्ण के पद्यों है। इसीलिए आध्यात्मिक रंग के चश्मे से इसमें भक्ति देखने का निषेध करते हैं।

विद्यापति की राधा सामान्य स्त्री के रूप में आती है इसमे श्रृंगार का चित्रण ही नवीन है चित्रण सामान्य स्त्री का है इस प्रकार विद्यापति की राधा का स्थान हिन्दी साहित्य में स्थापित होता है बाद में सूरदास, हरिऔध आदि के काव्य-कला - विकसित हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मुक्त छन्द

यद्यपि मुक्त छन्द का सूत्रपात तो हिन्दी में कबीर ही कर देते हैं परन्तु वास्तविक रूप में निराला को हिन्दी साहित्य में मुक्त छन्द का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने स्पष्ट रूप से "परिमल की भूमिका" में हिन्दी साहित्य को "छन्दों से मुक्त" कर दिया।

अपने विद्रोही स्वभाव के कारण तथा मानव मुक्ति के स्त्री मुक्ति की व्यवस्था में आस्था रखने वाले कवि निराला के स्वभावों के अनुरूप ही है। यह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह था। यह द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता, अभिधात्मकता तथा गद्यात्मकता के विरुद्ध स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी।

मुक्त-छन्द में छन्दों का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बन्धन ढीला पड़ जाता है। परन्तु आन्तरिक लय हमेशा बनी रहती है।

" अपने आली कणों का अर्पण कर, करता मैं तेरा तर्पण"

'कुकुरमुत्ता', 'बनबेला', 'सरोज स्मृति' उनकी मुक्त छन्द की प्रतिनिधि कविताएं हैं। बाद में प्रसाद भी मुक्त-छन्द में लिखते हैं।

इस प्रकार छायावाद में शुरू मुक्त छन्द आगे आने वाले काव्यान्दोलन में भी बना रहा। यद्यपि अगले स्तर पर लय-मुक्त भी हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य की महिलावादी धारा की सशक्त हस्ताक्षर है। इन्होंने अपने उपन्यासों से "कस्तूरी" और "कुण्डल" के विरोधाभास को समाप्त कर "गुड़ियों के भीतर की गुड़िया" को नई पहचान दी।

हिंदी भाषा की प्रयोग न करें

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में उनकी नारीवादी दृष्टि की कामयाबी हुई। उन्होंने "चाक" तथा "इदन्नमम" जैसे उपन्यास लिखे जो स्त्री विमर्श को नई ऊंचाई प्रदान करते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री पुरुष के आधिकारों द्वन्द्व विरोध कम, पूरकता की अधिक कामयाबी हुई है। वे स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में समानता, पूरकता का सम्बन्ध चाहती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैत्रीय पुष्पा के उपन्यासों की भाषा अत्यन्त, सरल, स्पष्ट व प्रवाह मयी है यद्यपि कहीं कहीं उन्होंने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया। उनके भाषा में लोक के तत्व कृष्णा सोबती जैसे से नहीं है परन्तु लोक-मुहावरों का प्रयोग खूब है।

इस प्रकार मैत्रीय पुष्पा अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरुष और मानव की समस्या के साथ-साथ उनके प्रेम, वियोग, संघर्ष आदि को भी दिखाती है।

5/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

हिन्दी साहित्य में घनानन्द को पहला आधुनिक संवेदना का कवि माना जाता है। यद्यपि कबीर, सूर, तुलसी जैसे भक्त कवियों का अपना स्थान व महत्त्व है फिर भी भारतेन्दु से पूर्व 'प्रेम के पीर' घनानन्द ही थे। उनकी संवेदना तथा शिल्प दोनों इस दृष्टि महत्त्व पूर्ण है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषा-शैली की अत्यन्त तारीफ की है। इनके भाषा में जो प्रवाह व सुकुमारता है वह रीतिकाल में विरले ही दिखाई पड़ती है।

" तेरो रूप आगधे, राधे राधे राधे।
तुमसे मिलने को ब्रजमोहन,
बहुत सतन है मांधे"

" अति सुधो स्नेह को मारग है
"जहं नेकु सयानप बांक नहीं"।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

घनानन्द में सूरदास की भांति भाव प्रेरित वक्रता है। जो सुजान के प्रती मनमे तीव्र भाव से निकलती है।

"उजरनि बाती छाती अपनेपन देखो"

घनानंद विरोधाभास अलंकार के बादशाह है। हिन्दी साहित्य में इनका सानी न हुआ।

घनानन्द मुक्त छन्द में ज्यादा रचनाए की है।

घनानन्द की शिल्प कला में प्रेमका, भावा, वक्रता, के अलावा विरह, लय तथा लाक्षणिता का भी अद्वितीय प्रयोग है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

धर्मवीर भारती 'अंधा युग' में "ढुनाटों के देवता" की भावों खोज करते हैं। यहाँ पर आकार धर्मवीर भारती 'महाभारत' की मधवीय कथा को द्वितीय विश्व-युद्ध में 'अन्धा युग' को जोड़ देते हैं।

अपनी संवेदना और शिल्प दोनों नाते 'अन्धा युग' एक मानक व आदर्श बन गया। इसमें कथानक का आधार 'महाभारत' की समाप्ती के बाद है इसमें गान्धारी, कृष्ण, अश्वथामा आदि पात्रों के माध्यम से युद्ध की विभीषिका को दिखाया गया है। कृष्ण यहाँ भगवान कम मानव अधिक है। गान्धारी कहती है:-

" वंचक है वह,
जब चाहा, अपने हिसाब
से नीति को मोड़ लिया।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यद्यपि यह द्वितीय विश्वयुद्ध पर पड़ा है जिसने मानवता की मूल्यीय क्षति पहुँचाई।

इसमें विदुर का दुख भी है, कृष्ण का शाप भी है यह आधुनिक सभ्यता की अमानवीयता पर चोट करता है।

'अन्धा युग' अपनी भाषा शैली, व संवाद योजना के कारण भी महत्त्वपूर्ण है यह पहली रचना है जो गद्य व पद्य के बीच के है, संवाद योजना भी इसी का अनुसरण करती है।

इस प्रकार 'अन्धा युग' आधुनिक युग के अन्धेपन को पौराणिक कहानी के माध्यम से दिखाने का सफल प्रयास है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) लोकजागरण के काव्य के रूप में भक्तिकाव्य का मूल्यांकन कीजिये। 20

वैसे तो हर काव्य कला अपने अलग-अलग सन्दर्भों में लोक से जुड़ने का प्रयास करती है परन्तु, भक्ति काव्य इस कारण से अद्भुत और अद्वितीय है कि यह न केवल लोक से जुड़ता है बल्कि है यह लोक से उत्पन्न होता है और लोक को जागृत भी करता है। यह लोक जागरण हमें भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवियों कबीर, सूरदास, जायसी तथा तुलसीदास में दिखाई पड़ता है।

जायसी द्वारा 'पद्मावत' के माध्यम से लोक में प्रेम तथा गुरु के महत्त्व को स्थापित कर उसे जगाने का प्रयास किया जाता है। नागमती का वियोग अपने गार्हस्थिक चेतना के कारण अद्वितीय बन जाता है। नागमती अपने रानीपन को छोड़ देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भक्तिकाव्य में लोक जागरण के सबसे बड़े कवि कबीर और तुलसी हैं।

कबीर - आँखों देखी के माध्यम से साम्प्रदायिक एकता, आडंबरों पर चोट, सामाजिक भेद भाव पर चोट करते हैं।

"कांकर पाथर जोड़ के मसजिद लियो बनाय ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।"

इन्होंने सगुण निर्गुण समन्वय भी किया।

इनके अलावा जायसी की भावना जागरण कर लोगों में समानता का मूल्य स्थापित किया।

तुलसी दास, लोकसाधना के कवि हैं साहित्य की साधना के माध्यम से लोकजागरण करते हैं। इनके साहित्य सामंतवाद विरोधी मूल्यों की स्थापना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने रामराज्य की कल्पना तथा रामचरित मानस व कवितावली में लोक जागरण का स्वर है शायद यही लोक प्रभाव है कि रामचरित मानस आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

सूरदास के साहित्य में स्त्री को मान मिला। यशोदा और राधा को स्थान मिला। स्त्री जागरण को आवाज मिली।

इस प्रकार भक्तिकाल हिन्दू मुस्लिम एकता, सभी भेद भाव समाप्ति की बात करता है यह लोक से उपजा और लोक का साहित्य था। इतना प्रभाव किसी और काव्य आन्दोलन का नहीं रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी कथा-साहित्य को काशीनाथ सिंह के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काशीनाथ सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य के समकालीन कथा लेखकों में से हैं। इनकी कथा का विधान व शैली अपनी सरलता, सहजता तथा लोक जुड़ाव के कारण महत्त्वपूर्ण है।

काशीनाथ सिंह की "काशी का अस्सी" उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण व प्रारम्भिक ख्याति की कथा माना जाता है। इसमें उन्होंने बनारस अर्थात काशी के अस्सी घाट पर होने वाले विचारों व बहसों को केन्द्र में रखकर अपनी कथा का जाल बुना है।

यद्यपि इनकी भाषा में औदात्य खोजने वालों को समस्या होगी क्योंकि इसमें स्थानीय शब्दों, गालियों, व प्रतीकों तथा बोलचाल शैली का प्रयोग हुआ है।

अपना भाषा शैली का भी उल्लेख करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्वारा ही साहित्य अकादमी
से उन्हें उनकी रचना -
"रेहन पर रग्घू" के लिए
हिन्दी का साहित्य अकादमी
सम्मान दिया। इससे उनके
अवदान को पहचान मिली।
"रेहन पर रग्घू", वैश्वीकरण
तथा बाजारवादी व्यवस्था
की खामियों पर चोट करता
है। इसमें वृद्धों की समस्या व
अंतर्जातीय विवाह को दिखाकर सामाजिक
प्रश्नों को उठाया गया है।
इसके अलावा उन्होंने नामवर सिंह
पर लिखा उनका संस्मरण "घर
का जोगी जोगड़ा" अत्यन्त ही सरल
व आत्मीय शैली लिखा गया है।
काशीनाथ सिंह की भाषा
सरल, देशी शब्दों से युक्त तथा हास्य
व व्यंग्य शैली की होती है। इनका
कथा साहित्यिक योगदान ही इनकी ख्याति का
आधार है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) मुक्तिबोध की काव्यभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रगतिशील कवि मुक्तिबोध 'ब्रह्मराक्षस' को अँधेरे में छोड़ने वाले कवि नहीं है। वे उनका लेवल उर शिख बनाकर अपनी काव्य प्रतिभा से उसकी महत्ता और बताते हैं। मुक्तिबोध, इसलिए संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर लड़ते हैं। वे 'रूप शिल्प कौशल ~~कैटेसी~~' की खोजते हैं, इसी के अनुसार अपनी काव्य भाषा का भी परिष्कार करते हैं।

मुक्ति की काव्य भाषा उनकी संवेदना और कथ्य को आगे ले जाने वाली होती है। वे अन्य प्रगतिवादियों के विपरीत काव्यभाषा को 'उपन्यास' नहीं मानते हैं। मुक्तिबोध

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

काव्य भाषा को नवीन सत्ता प्रदान करते हैं। ये बात उनकी 'एक साहित्यिक डायरी' में लिखे निबन्ध से सिद्ध होती है।

शब्द के उस ओर उतरी ठौर
पतिव्रता सूनी अँधेरी बावड़ी में
एक वृहद् रहस्य पैठा है

उनकी काव्य भाषा में बावड़ी शब्द बहुत आता है। वे अप्रस्तुत बिम्ब की रचना करते हैं। जब ऐसे में उसी के अनुरूप "पतिव्रता, सूनी, बावड़ी" शब्द का चयन करते हैं।

उनके भाषा में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के शब्द भी आते हैं। 'ब्रह्मराक्षस' कविता में तत्सम शब्दावली का प्रयोग है। लेकिन "ट्रेजडी" जैसे अंग्रेजी शब्द भी है।

"यह ट्रेजड़ी है नीच"

"आत्म-चेतस भाव में थी अन्यत्र"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस प्रकार मुक्तिबोध की काव्य भाषा प्रगतिवादी भाषा मानक को तोड़ती है उसे नये आयाम व सृजनात्मक आधार प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. (क) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास और यथार्थवाद का सम्बन्ध पुराना है। अंग्रेजी में उपन्यास की शुरुआत मानी जाती है और धीरे-धीरे वह यथार्थवाद की तरफ आगे बढ़ा है परन्तु हिन्दी उपन्यास परम्परा अल्प काल में ही यथार्थ से सम्बन्धित हो जाती है इसमें प्रेमचन्द का ऐतिहासिक योगदान है। वे हिन्दी उपन्यास की परम्परा को संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर यथार्थवाद से सम्बन्धित कर दिया।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' जैसे तिलस्मी व ऐय्यारी कथानक के तो दूसरी तरफ मनोरंजन प्रधान व उपदेशात्मक थे। प्रेमचन्द का आगमन हिन्दी उपन्यास परम्परा में क्रान्तिकारी था। 'भाग्यवती' की कहानी ने उपन्यास का आकार लिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"परीक्षा गुरु" की परम्परा को आगे बढ़ाया। प्रेमचन्द ने अपने आरम्भिक उपन्यासों में "आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद" का आधार बनाया। "गबन", "कर्मभूमि", "रंगभूमि" की रचना की परन्तु जल्दी ही 1936 में 'गोदान' में यथार्थ के नग्न चरित्र को पकड़ लिया। होरी की मृत्यु उपन्यास परम्परा में यथार्थवाद की परम्परा का सूत्रपात था।

हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद का वास्तविक सम्बन्ध अत्यन्त गहरा है क्योंकि उपन्यास व्यक्ति व समाज के जीवन को जीवन को समेटता है। उपन्यास यथार्थ के जितने नजदीक होगा। उसकी प्रामाणिकता व सार्थकता उतनी अधिक होगी।

हिन्दी उपन्यास व यथार्थवाद में आपसी सम्बन्ध को उदाहरण

प्रेमचंद से पहले गुलेरी जी, मिश्र जी को उपन्यासकारों की चर्चा करें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करते हुए राजेन्द्र यादव ने लिखा है कि उपन्यास को तभी आधुनिक जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है जब वह मनुष्य ही नहीं बल्कि समाज के सम्पूर्ण पात्रों को अपने में समेट ले।

हिन्दी उपन्यास ही नहीं जॉर्ज लुकाच, काफ्का से आलोचक भी उपन्यास का मूल तत्व यथार्थवाद को ही मानते हैं।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यास व यथार्थवाद का सम्बन्ध स्वयं सिद्ध है इन अनिवार्यता को प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया जैसे अन्य वाद की औपनिवेशिक विरोधी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धाराओं ने शोषित किया। और मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक, और दलित, सामाजिक पदाधिकारियों व उत्तर आधुनिक के साथ महिला तथा दलित पक्षों के उत्थान होता गये।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के समादृत होने के कारणों का उद्घाटन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह 'दिनकर' को राष्ट्रकवि इसलिए कहा जाता है कि उनकी कविता का तेवर व भावना दोनों राष्ट्रभावना से परिपूर्ण हैं। वे जनकवि थे वे जनता को सीधे सम्बोधित करते हैं —

"सिंहासन खाली करो की जनता है।"

यह पंक्ति तत्कालीन स्वतंत्रता आंदोलन को आवाज देने वाली पंक्ति है। वे परिवर्तन के साक्षी हैं। 1942 के भारत-छोड़ो आंदोलन को अपनी कविता में अभिव्यक्ति का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रहे होते हैं।

'दिनकर' ने अपनी रचना 'कुरुक्षेत्र' में युधिष्ठिर-भीष्म संवाद में युद्ध को नैतिक दृष्टि से जायज नहीं ठहराया है कि वह यदि इकतरफी से लड़ा जाए।

"जो तटस्थ है,
समय लिखेगा उनका भी इतिहास"

इसलिए वे सांस्कृतिक जागृति के कवि थे वे अपने काव्य में राष्ट्र को संबोधित करते थे।

उनकी भाषा भी राष्ट्रवाद के स्वर को प्रभावित करती थी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वह सीधे-सीधे आमजन को समझ में आने वाली है। उनकी भाषा शैली लोगों को झकझोर देती है उनमे नई चेतना व ऊर्जा भर देती है।

इस प्रकार दिनकर को राष्ट्रकवि कहने में कोई आपत्ती नहीं है।

7½
15

और बेहतर बनाएं
मॉडल उत्तर देखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिए। 15

निराला को आधुनिक हिन्दी का कबीर कहे जाने के पीछे सबसे बड़ा तर्क इनके प्रगति-चेतना में निहित है।

निराला की प्रगतिचेतना का प्रमाण है कि वे छायावाद में रहकर छायावाद की सीमा का अतिक्रमण करते है।

"मधुमय आकाश से उतरती है संध्या सुन्दरी परी, धीरे-धीरे"

यह पंक्ति छायावादी प्रकृति चेतना से पूर्ण है। यह प्रकृति का मानवीकरण है और जब वे आगे लिखते है ——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"स्थिर शब्दवेन्द्र को हिला,
रहा कर-फिर संज्ञाप".
यहाँ पर राम का मानवीकरण
कर दिया है। यह निराला
की प्रगति चेतना का
उदाहरण है।
वे कविता को "परिमल
की भूमिका में छन्द से
मुक्त करते हैं। वे छन्द
के बन्धन को तोड़ देते
हैं। और "कर" वह
तोड़ती पत्थर" जिसे
देखा मैंने इलाहाबाद के
पथ पर" इसमें वे
प्रगतिवाद में प्रवेश करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation